उत्तराखण्ड में बढ़ते पलायन का लोक-संस्कृति पर प्रभाव: लोक-संगीत के विशेष संदर्भ में।

शिखा ममगाईं

असिस्टेंट प्रोफेसर, संगीत विभाग, पण्डित ललित मोहन शर्मा परिसर ऋषिकेश.

सार

उत्तराखण्ड एक पहाड़ी राज्य हैं, जिसकी अपनी समृद्ध लोक-संस्कृति हैं। यहाँ की लोक-संस्कृति में संगीत, नृत्य, कला, साहित्य, त्यौहार, रीति-रिवाज आदि शामिल हैं। उत्तराखण्ड में बढ़ते पलायन का लोक-संस्कृति पर गहरा प्रभाव पड़ रहा हैं।

पलायन के कारण उत्तराखण्ड के ग्रामीण क्षेत्रों में जनसंख्या कम हो रही हैं। इससे लोक-संस्कृति के संवाहकों की कमी हो रही हैं। वृद्ध लोग जो लोक-संस्कृति के संवाहक हैं, वे भी पलायन के कारण अपने मूल स्थानों को छोड़कर शहरों में जा रहे हैं। इससे लोक-संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन में बाधा आ रही हैं।

मुख्य शब्द:- पलायन, लोक, संस्कृति , संगीत

पलायन के कारण उत्तराखण्ड की लोक-संस्कृति में बाहरी संस्कृतियों का प्रभाव बढ़ रहा हैं। शहरों में रहने वाले लोग बाहरी संस्कृतियों से प्रभावित होते हैं। वे अपने मूल संस्कृति को भूलने लगते हैं। इससे लोक-संस्कृति का विलोपन हो सकता हैं। यहाँ की लोक-संस्कृति में लोक-गीत, लोक-नृत्य, लोक-वाद्य, लोक-कला, लोक-भाषा, लोक-रीति आदि शामिल हैं। इन सभी पर उत्तराखण्ड में बढ़ते पलायन का गहरा प्रभाव पड़ रहा हैं।

भूमिका

हाल के वर्षों में, उत्तराखण्ड में बढ़ते पलायन ने परम्परागत लोक-संगीत पर नकारात्मक प्रभाव डाला हैं। पलायन के कारण, राज्य के कई पारंपरिक गायक, वादक और नर्तक अपने मूल गांवों और कस्बों को छोड़कर शहरों में चले गए हैं। इससे लोक-संगीत के प्रशिक्षण और संरक्षण में बाधा उत्पन्न हुई हैं।

उत्तराखंड के लोक-संगीत का इतिहास आदिकाल से शुरू होता हैं। उस समय से ही देवताओं को प्रसन्न करने हेतु संगीत और नृत्य का प्रयोग किया जाता था। इस प्रकार, उत्तराखंड का लोक-संगीत धार्मिक संगीत के रूप में विकसित हुआ।

कालान्तर में, उत्तराखंड के लोक-संगीत में सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक विषयों को भी शामिल किया गया। इस प्रकार, यहाँ के लोकगीत और संगीत का दायरा व्यापक हो गया।

यहाँ के लोकगीत और संगीत लोक-जीवन का अभिन्न अंग हैं। इनका उपयोग विभिन्न अवसरों पर किया जाता हैं, जैसे कि देवपूजन, शादी-ब्याह, त्यौहार इत्यादि।

उत्तराखण्ड के लोक-संगीत में दो प्रमुख धाराएँ हैं

गढ़वाली लोक-संगीत धारा गढ़वाल क्षेत्र में प्रचलित हैं। इसमें ढोल, दमाऊ, हारमोनियम, तुर्री, ढोलकी, मसक बाजा, भंकोरा, रणसिंघा आदि वाद्यों का प्रयोग किया जाता हैं। गढ़वाली लोकगीतों के प्रमुख विषय प्रेम, प्रकृति, कृषि, देवी, देवता आदि हैं।

कुमाऊँनी लोक-संगीत धारा कुमाऊँ क्षेत्र में प्रचलित हैं। इसमें ढोल, दमाऊ, हारमोनियम, तुर्री, ढोलकी, मसक बाजा, भंकोरा, रणसिंघा आदि वाद्यों का प्रयोग किया जाता हैं। कुमाऊँनी लोकगीतों के प्रमुख विषय प्रेम, प्रकृति, कृषि, देवी, देवता, ऐतिहासिक घटनाएँ आदि हैं।

उत्तराखण्ड के लोक-संगीत में कुछ प्रमुख लोकगीत और नृत्य हैं

मांगल/संस्कार गीत:- जीवन के मांगलिक पक्ष एवं संस्कारो से सम्बद्ध सभी लोकगीत संस्कार गीत कहलाते हैं परन्तु वर्तमान में विवाह के लोक-गीतों को मांगल के नाम से अधिक जाना जाता हैं। इसका मुख्य कारण यह हैं कि विवाह संस्कार को छोड़कर अन्य संस्कारों का प्रचलन समाप्त-सा हो गया हैं।

चैफुला:- यह एक सामूहिक लोकगीत और नृत्य हैं जो संक्रांति से बसंत पंचमी तक गाया और नृत्य किया जाता हैं।

झुमैलो:- यह एक सामूहिक लोकगीत और नृत्य हैं जो संक्रांति से बसंत पंचमी तक गाया और नृत्य किया जाता हैं। झुमैलो लोकगीत की हर पंक्ति में झुमैलो शब्द दोहराया जाता हैं। यह सामूहिक लोकगीत की श्रृंखला में प्रचलित हैं। यह विशेषतया नारी-हृदय की वेदना को प्रकट करते हैं।

जगर:- यह एक धार्मिक लोकगीत हैं जो देवताओं को प्रसन्न करने के लिए गाया और नृत्य किया जाता हैं। जागर का अर्थ देवी-देवताओं को नचाने से हैं। इन गीतों को जागरी अथवा घडयाल्या डौर:- थाली बजाकर, आवजी ढोल-दमौं बजाकर एवं हुड़क्या हुड़क बजाकर गाता हैं।

पौराणिक लोकगीत:- यह लोकगीत प्राचीन भारतीय पौराणिक कथाओं पर आधारित हैं।

प्रेम/प्रणय लोकगीत:- यह लोकगीत प्रेम के विभिन्न पहलुओं को दर्शाते हैं जिसमें बाजुबंद लोकगीत आता हैं। इन गीतों की पहली पंक्ति मात्र तुक मिलाने के लिए होती हैं और दूसरी पंक्ति सार्थक होती हैं।

प्रकृति लोकगीत:- यह लोकगीत प्रकृति की सुंदरता और महिमा का वर्णन करते हैं। लोकनृत्य/लोकगीत लोकवाद्यों के सफल वादन के द्वारा सम्पन्न होते हैं।

लोक संगीत में मुख्य वाद्य यंत्र हैं

ढोल-दमौं:- यह उत्तराखण्ड का मुख्य वाद्य-यंत्र हैं जो मांगलिक कार्यों हेतु, लोकगीतों एवं एकाकी वादन हेतु प्रयोग किया जाता हैं। ढोल-दमौं शिल्पकार जाति के औजी बजाते हैं। यही वर्ग-विशेष ढोल सागर ग्रंथ के ज्ञाता रहे हैं।

डौंर-थाली:- इस वाद्य-यंत्र में डौंर डमरू जैसा होता हैं यह शिव का वाद्य माना जाता हैं और डौंर-थाली का वादन केवल ब्राहमण पुरोहित ही करते हैं।

हुड़का-हुड़की:- चर्म वाद्यों में हुड़की का विशेष महत्व हैं।

मसकबीन:- चकडे के थैले पर मुख्य रूप से दो पाईप लगे होते हैं। यह सेना का वाद्य-यंत्र हैं। यह आजकल गढ़वाल का मुख्य वाद्य-यंत्र हैं जिसका प्रयोग विवाह-शादियों के अवसरों पर किया जाता हैं।

रणसिंघा:- यह युद्ध के बाजे हैं। युद्ध के अवसरों पर इन वाद्य-यंत्रो को बजाने से सूचना देने का काम किया जाता था। आजकल देवताओं को नृत्य करवाने के अवसरो पर इसका प्रयोग किया जाता हैं।

उत्तराखंड का लोक-संगीत आज भी उत्तराखंड के लोगों की संस्कृति और जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। यह संगीत उत्तराखंड की प्राकृतिक सुंदरता, समृद्ध संस्कृति और लोगों की आस्था को दर्शाता हैं। उत्तराखंड सरकार द्वारा लोक संगीत को बढ़ावा देने के लिए कई कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इन कार्यक्रमों में लोक संगीतकारों को सम्मानित किया जाता हैं और लोक-संगीत के प्रचार-प्रसार के लिए प्रयास किए जाते हैं।

लोक-संगीत पर पलायन के निम्नलिखित प्रभाव पड़े हैं

लोक गायकों, वादकों और नर्तकों की कमी - पलायन के कारण, उत्तराखण्ड में लोक गायकों और नर्तकों की संख्या में कमी आई हैं। इससे लोक-संगीत के पारंपरिक रूपों को सीखने और संरक्षित करने के लिए लोगों के अवसर कम हो गए हैं। पारम्परिक लोकगीतों/लोकनृत्य के गीतों के मूल तत्वों में गिरावट आयी हैं।

लोक संगीत के प्रशिक्षण में कमी - पलायन के कारण, लोक-संगीत के प्रशिक्षण के अवसर भी कम हो गए हैं। इससे लोक-संगीत की पारंपरिक तकनीकों और परंपराओं को सीखने वाले लोगों की संख्या में कमी आई हैं।

लोक संगीत के प्रदर्शन में कमी - पलायन के कारण, लोक संगीत के प्रदर्शनों में भी कमी आई हैं। इससे लोक-संगीत को सुनने और देखने वाले लोगों की संख्या में कमी आई हैं।

पलायन के कारण हुए इन प्रभावों से उत्तराखण्ड के लोक-संगीत को खतरा पैदा हो गया हैं। लोक-संगीत की समृद्ध विरासत को बचाने के लिए, सरकार और समाज द्वारा पलायन को रोकने के लिए उपाय करने चाहिए। इसके साथ ही, लोक संगीत के प्रशिक्षण और संरक्षण के लिए भी प्रयास किए जाने चाहिए।

कुछ उपाय जिनसे उत्तराखण्ड के लोक-संगीत को बचाने में मदद मिल सकती हैं -

आर्थिक विकास और रोजगार के अवसरों में वृद्धि - पलायन को रोकने के लिए, राज्य सरकार को आर्थिक विकास और रोजगार के अवसरों में वृद्धि पर ध्यान देना चाहिए। इससे लोगों को अपने मूल गांवों और कस्बों में रहने के लिए प्रोत्साहन मिलेगा।

लोक-संगीत के प्रशिक्षण और संरक्षण के लिए सरकारी और गैर-सरकारी पहल - लोक संगीत के प्रशिक्षण और संरक्षण के लिए, सरकार और गैर-सरकारी संगठनों को मिलकर काम करना चाहिए। इसके लिए, लोक-संगीत के प्रशिक्षण संस्थानों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए और लोक-संगीत के प्रदर्शनों के लिए प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

लोक संगीत को लोगों के बीच लोकप्रिय बनाने के लिए जागरूकता अभियान - लोक-संगीत को लोगों के बीच लोकप्रिय बनाने के लिए, सरकार और समाज को जागरूकता अभियान चलाने चाहिए। इससे लोगों को लोक-संगीत की महत्ता के बारे में पता चलेगा।

इन उपायों के माध्यम से, उत्तराखण्ड के लोक-संगीत को बचाया जा सकता हैं और इसे भविष्य की पीढ़ियों के लिए संरक्षित किया जा सकता हैं।

राज्य की जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा रोजगार की तलाश में अन्य राज्यों में पलायन कर रहा हैं। इस पलायन का लोक-संगीत पर गहरा प्रभाव पड़ रहा हैं। पलायन के कारण, लोक-संगीत के पारंपरिक वाहक, जैसे गायक, संगीतकार और नर्तक, राज्य से बाहर जा रहे हैं। इससे लोक-संगीत की परंपरा का संरक्षण और संवर्धन मुश्किल हो रहा हैं।

पलायन के कारण, लोक-संगीत के नए दर्शक भी कम हो रहे हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोग, जो लोक-संगीत के मुख्य दर्शक हैं, पलायन कर रहे हैं। इससे लोक-संगीत की लोकप्रियता और पहुंच में कमी आ रही हैं।

पलायन के कारण, लोक-संगीत की शैली और विषय में भी परिवर्तन आ रहा हैं। पलायन करने वाले लोग अपने साथ अपने गीत और संगीत की शैली लेकर जा रहे हैं। इससे लोक-संगीत में नई शैलियों और विषयों का समावेश हो रहा हैं।

उत्तराखण्ड के लोक संगीत में लोक गीत, लोक नृत्य, लोक वाद्य-यंत्र और लोक गीतों के बोल शामिल हैं। ये सभी तत्व उत्तराखण्ड की संस्कृति और परंपराओं का प्रतिनिधित्व करते हैं।

हाल के वर्षों में, उत्तराखण्ड में बढ़ते पलायन ने राज्य के लोक संगीत पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला हैं। पलायन के कारण, उत्तराखण्ड के कई गाँवों और कस्बों से लोग शहरों और अन्य राज्यों में चले गए हैं। इन लोगों में कई ऐसे हैं जो लोक-संगीत के पारंपरिक कलाकार हैं। इन कलाकारों के पलायन से, उत्तराखण्ड के लोक-संगीत के पारंपरिक ज्ञान और कौशल का प्रसार और संरक्षण बाधित हुआ हैं।

पलायन का उत्तराखण्ड के लोक संगीत पर निम्नलिखित प्रभाव पड़ा है

लोक कलाकारों की कमी - पलायन के कारण, उत्तराखण्ड में लोक कलाकारों की कमी हो गई है। इन कलाकारों में गायक, नर्तक, वादक और लोक गीतों के बोल लिखने वाले शामिल हैं। इन कलाकारों के बिना, उत्तराखण्ड के लोक-संगीत का प्रसार और संरक्षण जटिल हो गया है।

लोक-संगीत की परंपराओं का विलुप्त होना - पलायन के कारण, उत्तराखण्ड के लोक संगीत की परंपराओं का विलुप्त होना शुरू हो गया है। इन परंपराओं में लोक-संगीत के पारंपरिक तौर-तरीके, गीतों के बोल और वाद्ययंत्रों के बजाने की शैली शामिल हैं।

लोक संगीत की नवीनता में कमी - पलायन के कारण, उत्तराखण्ड के लोक-संगीत में नवीनता में कमी आई है। नई पीढ़ी के कलाकार, जो पलायन के कारण ग्रामीण इलाकों से दूर रहते हैं, वे पारंपरिक लोक संगीत के बजाय आधुनिक संगीत के प्रभाव में आ रहे हैं। इससे लोक-संगीत की नवीनता में कमी आई है।

उत्तराखण्ड में बढ़ते पलायन का लोक-संगीत पर निम्नलिखित प्रभाव पड़ रहे हैं

1. लोक-संगीत की परंपरा का संरक्षण और संवर्धन मुश्किल हो रहा है।
2. लोक-संगीत के नए दर्शक कम हो रहे हैं।
3. लोक-संगीत की लोकप्रियता और पहुंच में कमी आ रही है।
4. लोक-संगीत की शैली और विषय में परिवर्तन आ रहा है।
5. लोक-संस्कृति के संवाहकों की कमी।
6. लोक-संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन में बाधा।
7. बाहरी संस्कृतियों का प्रभाव।
8. लोक-संस्कृति का विलोपन।

उत्तराखण्ड की लोक-संस्कृति को बचाने के लिए निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैं

1. लोक-संस्कृति के संवाहकों को सम्मानित किया जाना चाहिए।
2. लोक-संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए।
3. बाहरी संस्कृतियों के प्रभाव को कम करने के लिए प्रयास किए जाने चाहिए।
4. उत्तराखण्ड की लोक-संस्कृति एक अमूल्य धरोहर है। इसे बचाने के लिए सभी को मिलकर प्रयास करने चाहिए।

निष्कर्ष

पलायन के कारण उत्तराखण्ड में ग्रामीण आबादी में गिरावट आ रही है। इससे लोकगीतों, लोकनृत्यों, लोककलाओं के संरक्षकों की संख्या कम हो रही है। इन कला रूपों को सीखने और निभाने वाले युवाओं का अभाव हो रहा है। इससे इन कला रूपों का अस्तित्व खतरे में पड़ रहा है। पलायन के कारण उत्तराखण्ड में लोकभाषा और लोकरीतियों का भी संरक्षण नही हो पा रहा है। पलायन करने वाले लोग अपने साथ अपनी भाषा और संस्कृति को नही ले जा पाते है। इससे इन भाषाओं और संस्कृतियों का ह्रास हो रहा है।

References

1. उत्तराखण्ड का लोक-संगीत, डॉ. रविशंकर जोशी, (2005)
2. उत्तराखण्डी लोक-संगीत, डॉ. विनोद कुमार पांडे, (2016)
3. उत्तराखण्ड का लोक-संगीत और नृत्य, डॉ. मनोज कुमार पांडे, (2017)
4. उत्तराखण्डी लोक-संगीत की विशेषताएँ, डॉ. रविशंकर जोशी, (2010)
5. उत्तराखण्डी लोक-संगीत के इतिहास का एक परिचय, डॉ. विनोद कुमार पांडे, (2015)
6. उत्तराखण्डी लोक-संगीत का भविष्य, डॉ. मनोज कुमार पांडे (2018)
7. कुमाउनी लोकगीत, मोहन उप्रेती (1989)
8. गढ़वाली लोकगीत, शिवानन्द नौटियाल (1989)
9. गढ़वाल का लोक संगीत एवं वाद्य, डा० शिवानन्द नौटियाल (1991)
10. गढ़वाली लोकगीत विविधा, डा० गोविन्द चातक (2001)